आईसीएआर-निनफेट ने "बिछुआ और भीमल फाइबर से हस्तशिल्प वस्तुओं के निर्माण" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

10 अगस्त, **2023,** ताड़ीखेत, अल्मोडा, उत्तराखंड:

आईसीएआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरल फाइबर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (एनआईएनएफईटी), कोलकाता ने **30** जुलाई से **10** अगस्त **2023** तक ताड़ीखेत, रानीखेत, जिला अल्मोडा, उत्तराखंड में ग्रामीण उद्यम त्वरण परियोजना (आरईएपी) के सहयोग से "बिछुआ और भीमल फाइबर से हस्तशिल्प वस्तुओं के निर्माण" पर **12** दिवसीय ऑन-साइट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम का आयोजन खंड विकास कार्यालय, ताड़ीखेत, जिला अल्मोडा, उत्तराखंड में किया गया। डॉ. प्रमाद नैनवाल, स्थानीय विधायक, ताड़ीखेत; डॉ. ए.एन. रॉय, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-निनफेट; समापन कार्यक्रम में आरईएपी के परियोजना प्रबंधक श्री राजेश मठपाल उपस्थित थे। डॉ. प्रमाद नैनवाल ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय महिलाओं को स्थानीय रूप से उगाए गए कम उपयोग वाले बिछुआ और भीमल पौधों से विभिन्न हस्तशिल्प उत्पाद जैसे बैग, राखी, घरेलू सामान आदि बनाकर अतिरिक्त आय उत्पन्न करने में मदद करेगा। डॉ. ए.एन. रॉय ने उल्लेख किया कि बिछुआ फाइबर का निष्कर्षण माइक्रोबियल रेटिंग प्रक्रिया द्वारा **5-10** दिनों के भीतर किया जा सकता है, जैसा कि आईसीएआर-एनआईएनएफईटी टीम द्वारा प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि उनके विकसित हस्तशिल्प उत्पादों में विविधता लाने के लिए फाइबर/यार्न की ब्लीचिंग और रंगाई की भी आवश्यकता होती है। आईसीएआर-एनआईएनएफईटी, कोलकाता के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.के. सामंता और डॉ. ए. सिंघा द्वारा जून, **2023** में **REAP** से जुड़ी स्थानीय महिलाओं को एक हैंड होल्ड ट्रेनिंग भी दी गई थी। निकाले गए रेशों को संसाधित किया गया और वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम में इनपुट सामग्री के रूप में उपयोग किया गया। डॉ. ए.एन. रॉय ने यह भी कहा कि इन दो रेशों, बिछुआ और भीमल में काफी संभावनाएं हैं और इन्हें उत्तराखंड की संपदा माना जा सकता है, जहां तक इसके रेशे के निष्कर्षण, रेटिंग, गुणवत्ता मूल्यांकन, यांत्रिक और रासायनिक प्रसंस्करण के मामले में अधिक वैज्ञानिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। और विशिष्ट हस्तशिल्प सहित मूल्यवर्धित उत्पादों के विकास का संबंध है। इस क्षेत्र में व्यवस्थित विकास से स्थानीय महिलाओं और उद्यमियों के लिए अतिरिक्त आय सृजन का रास्ता सुनिश्चित होगा।

(सूत्र: आईसीएआर-राष्ट्रीय प्राकृतिक फाइबर इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता)

ICAR-NINFET organized Training Programme on "Manufacturing of Handicraft Items from Nettle & Bhimal Fibres

August 10, 2023, Tarikhet, Almora, Uttarakhand:

ICAR-National Institute of Natural Fibre Engineering and Technology (NINFET), Kolkata organized a 12 days on-site Training Programme on **"Manufacturing of Handicraft Items from Nettle & Bhimal Fibres'** in collaboration with Rural Enterprise Acceleration Project (REAP) during 30th July to 10th August 2023 at Tarikhet in Ranikhet, District Almora, Uttarakhand.

The programme was organized at Block Development Office, Tarikhet, District Almora, Uttarakhand. Dr. Pramad Nainwal, local MLA, Tarikhet; Dr. A. N. Roy, Principal scientist, ICAR-NINFET; Shri Rajesh Mathpal, Project Manager of REAP were present in the valedictory programme. Dr. Pramad Nainwal mentioned that the training programme will help the local women to generate extra income by making different handicrafts products viz., bag, rakhi, household items etc. from locally grown underutilized Nettle and Bhimal plants. Dr. A. N. Roy mentioned that the extraction of nettle fibre can be carried out by microbial retting process within 5-10 days, as demonstrated by ICAR-NINFET team. He also added that bleaching and dyeing of the fibres/yarn is also required to diversify their developed handicraft products. A hand hold training was also given to the local women associated with REAP in the month of June, 2023 by the Dr. K. K. Samanta and Dr. A. Singha, senior scientists of ICAR-NINFET, Kolkata. The extracted fibres were processed and used as inputs materials in the present training programme. Dr. A. N. Roy also stated that these two fibres viz., Nettle and Bhimal have enormous potential and can be considered as wealth of Uttarakhand, which need much more scientific intervention as far as its fibre extraction, retting, quality evaluation, mechanical & chemical processing and value-added products development including elite handicrafts are concerned. As systematic development in this area would ensure a way for extra incomes generation by local women and entrepreneur.

(Source: ICAR-National Institute of Natural Fibre Engineering and Technology, Kolkata)

कार्यक्रम की झलकियाँ/ Glimpses of the programme:

Demonstration by Dr. Atul Singha

During the training session

Visit of Dr. Pramad Nainwal, local MLA, Tarikhet

Showcasing of various products made from natural fibres